Question :- मास्टरी अधिगम प्रतिपादन के विभिन्न तत्वों व लक्षणों का वर्णन कीजिए। (1)

> मास्टरी अधिगम मॉडल :-

अर्थ :-

मास्टरी अधिगम का अर्थ है अधिक उत्तम ढंग से सिखाया या अधिकार पूर्वक सीखना।

मास्टरी अधिगम से संबंधित विचारधारा का उपयोग मुख्य तौर पर दो अर्थों में किया जाता है।

सूक्ष्म का अर्थ :-

इस प्रकार के सीखने का सम्बन्ध बालक के ज्ञानात्मक विकास से लिया जाता है।

व्यापक अर्थ में :-

मास्टरी अधिगम का सम्बन्ध बालक के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित है।

मास्टरी अधिगम का उपयोग मुख्य रूप से दो कार्यों के लिए किया जाता है।

1. पढ़ाने सीखने की प्रक्रिया में उन्नति लाने के लिए।
2. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मूल्यांकन करने के लिए।

> मास्टरी अधिगम के मुख्य तत्व :-

1. उद्देश्य :-

ब्लूम के मास्टरी अधिगम मॉडल का मुख्य उद्देश्य विषय पर समय सीमा लागू किये बगैर तथा विद्यार्थी की स्वयं की गति रूचि तथा विषय के पूर्व ज्ञान के अनुरूप मास्टरी करना या अधिकार करना है। दूसरे शब्दों में इस मॉडल का प्रतिमान का उद्देश्य स्कूल विषयों में निवादन के संतोष जनक स्तर को अर्जित करना है।

यह निश्चित करता है कि कुछ विद्यार्थियों के पास अधिक समय होता है और वे रचनात्मक मूल्यांकन के परिणामों के अनुसार अतिरिक्त अनुदेशन प्राप्त करते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बालक विस्तृत पाठ्यक्रम प्रणाली की खोज करे ताकि पारस्परिक स्कूल संगठनों के अनुदेशन की तुलना में वैयक्तिक अनुदेशिक को अधिक मात्रा में प्रयोग किया जा सके।

2. संरचना :-

इस प्रतिमान की संरचना में अनुदेशन का व्यक्तिक प्रोग्राम सम्मिलत होता है।
व्यक्तिक अनुदेशन प्रोग्राम मोडुलर पाठ्यक्रम की व्याख्या करता है जिसे प्रणाली विश्लेषण विधियों का पाठ्यक्रम विकास सामग्री पर प्रयोग करके विकसित किया जाता है।

3. संरचना के पद :-

1. लक्ष्य निर्धारित
2. अधिगम प्रक्रियाएँ
3. व्यवहारिक उद्देश्य
4. पाठ्य सामग्री का विकास - उद्देश्य प्राप्ति की सामग्री
5. प्रणाली के घटक - विद्यार्थी, अध्यापक और सामग्री
6. प्रतिपुष्टि उपयुक्त (Feedback) - विद्यार्थी की प्रगति पर नजर रखें।

4. सामाजिक प्रणाली :-

माष्टरी अधिगम मॉड्ल में अध्यापक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इस मॉड्ल में अध्यापक विद्यार्थियों की विषय पर अधिकार करने में सहायता करता है। और मुख्य जो छात्र वर्ग विचार सामग्री पर आहारथ। विचार हालिल करने मे मदद करना है। यहाँ सीखने वाले भी गति पर ध्यान नहीं दिया जाता है। प्रत्येक छात्र अपनी गति से काम करता है। शिक्षक छात्र को यह याद दिलाने में सचेत रहता है कि कार्य को पूरा करने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण पूर्ण रूप से सीखना है। यह प्रतिमान आत्म विश्वास और सफलता की आशा में धीमे सीखने वालों की मदद करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4) सहायक / मूल्यांकन प्रणाली :-

यह मॉडल इस बात का मूल्यांकन करने में विश्वास करता है कि क्या विद्यार्थी ने उस विशिष्ट उद्देश्य में अधिकार प्राप्त कर लिया है? यह मॉडल समस्त कक्षा के मूल्यांकन में विश्वास नहीं करता है। औपचारिक (Solving Problem) मूल्यांकन के साथ शिक्षक को छात्र द्वारा सामना कि जाने वाली कठिनाइयों की प्रकृति का पता चल जाता है। मूल्यांकन में प्रत्येक इकाई के साथ (निदानात्मक) समस्या की पहचान प्रशिक्षण होते हैं ताकि विद्यार्थियों की प्रगति मापी जा सके।

5) मास्टरी अधिगम मॉडल का उपयोग :-

इस मॉडल के अनुसार हर विद्यार्थी अपनी गति के अनुरूप कार्य कर सकता है। यह मॉडल इस धारणा पर आधारित है कि कक्षा के सभी छात्र मास्टरी स्तर तक सीख सकते हैं और यदि उनकी आवश्यकता, रुचि और क्षमता के अनुसार पर्याप्त समय, पर्याप्त निर्देश और समय पर उचित सहायता प्रदान की जाती है।

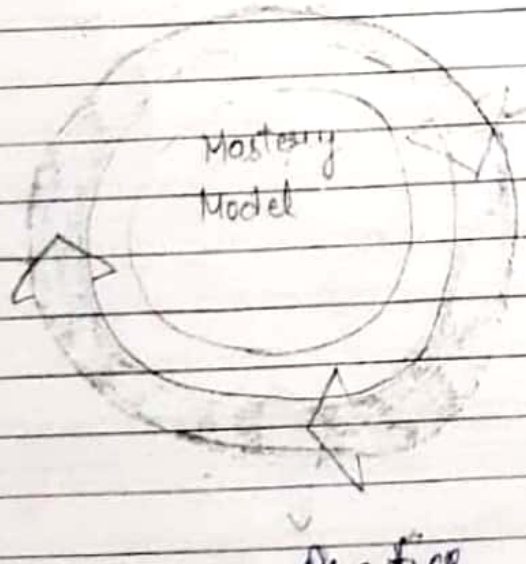

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

> मास्टरी अधिगम के नियम :-

1. शिक्षण अधिगम से स्पष्ट उद्देश्य तय करना
2. छात्रों की व्यक्तिगत-भिन्नताओं की आवश्यकताओं को समझना
3. छात्र की गति अनुसार शिक्षा अधिगम प्रक्रिया
4. अनुभव से सीखना
5. उचित प्रकार की अधिगम सामग्री का प्रयोग करना
6. सीखने की प्रक्रिया को छात्र-केन्द्रित बनाना
7. क्रियाशीलता द्वारा सीखना
8. अध्यापक द्वारा छात्रों को प्रभावपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करना
9. अध्यापक द्वारा छात्रों को उचित परामर्श प्रदान करना
10. निरंतर मूल्यांकन

> मास्टरी अधिगम के सिद्धांत :-

1. शैक्षिक लक्ष्य
2. समस्याओं का निदान
3. उपचारात्मक अनुदेशन
4. निश्चित पाठ्यक्रम
5. लचीला पन
6. विभिन्न गति दर
7. क्रमबद्ध अधिगम
8. सीमित कौशल
9. उपलब्धियों का मूल्यांकन
10. समय और शक्ति का महत्त्व

> मास्टरी-अधिगम की उपयोगिता या महत्त्व :-

1. रचनात्मक कौशल का विकास
2. शिक्षण प्रभावशाली
3. उद्देश्यपूर्ण शिक्षण

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO

Date :

Page :

(5)

4. विद्यार्थियों की रुचियों को महत्त्व

5. उचित मार्ग दर्शन

6. व्यवहार परिवर्तन

7. कठिन विषयों में सहायक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date :
Page :

UNIT → II nd (1)

Question 2 ग्लेसर का बुनियादी शिक्षण प्रतिमान क्या है,

रोबर्ट ग्लेसर द्वारा Basic Teaching Modal 1962 में दिया गया था, यह एक मनो-वैज्ञानिक शिक्षण मॉडल है। यह मॉडल शिक्षण और सीखने के बीच के संबंध की व्याख्या करता है। अध्यापक अपने विषय-वस्तु को छात्रों को कितना सीखा पाया है। सफल अध्यापक वही है। जो अपनी विषय-वस्तु छात्रो तक सहय रूप में पहुँचा सकें। अध्यापन कार्य तभी सफल हो सकता है। जब अध्यापक की शिक्षण विधियाँ उस स्तर की हो कि बालक सीखने में सहज महसूस करें। अधिगम व्यवस्था को उन्नत बनाने में यह प्रतिमान सहायता करता है। यह शिक्षण प्रतिमान अत्यंत लचीला है। यह किसी भी शिक्षण विषय को कठिनाई से सरलीकरण में प्रस्तुत करता है।

इस शिक्षण के चार बुनियादी तत्व -:

1. अनुदेशनात्मक उद्देश्य -: इसमें उन उद्देश्यों के आधार पर ही शिक्षण कार्य किया जाता है, जिन्हे किसी अनुदेशन की समाप्ति पर प्राप्त करते है। यह शिक्षण अधिगम के आधार पर कार्य करता है। और उसे निश्चित दिशा प्रदान करता है।

i) स्कूल के उद्देश्य
ii) शिक्षक के उद्देश्य
iii) विद्यार्थी के उद्देश्य

2. प्रारंभिक व्यवहार - यह वह ज्ञान है। जो शिक्षण प्रक्रिया को शुरू करने से पहले विद्यार्थियों में होती है, यह विद्यार्थी का प्रारंभिक ज्ञान स्तर है। जब

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date :
Page :

विद्यार्थी शुरू में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता है। तो शिक्षा से संबंधित व्यवहारिक ज्ञान होता है।

3. अनुदेशनात्मक प्रक्रिया :- इसमें उन क्रियाओ को बताया गया है। जो किसी पाठ्य सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिए प्रयुक्त की जाती है। अनुदेशन प्रक्रिया में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच अंतःक्रियाएं होती हैं। जैसे - प्रश्न पूछना, व्याख्या, भाषण, शिक्षण सहायक साधनों का प्रयोग करना आदि।

i) शाब्दिक अधिगम
ii) यंत्र से संबंधित अधिगम
iii) संकेत अधिगम

4. निष्पादन मूल्यांकन :- इसमें विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्यों के अनुदेशन के लक्ष्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन किया जाता है। इस मूल्यांकन को जाँचने के लिए विद्यार्थी से प्रश्न पूछे जाते हैं। और उसकी कमियों का आंकलन कर मूल्यांकन किया जाता है।

★. ग्लेसर के बुनियादी शिक्षण प्रतिमान के आधारभूत तत्व :-

1) उद्देश्य :- इसका उद्देश्य शिक्षण के विभिन्न चरणों की सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया की व्याख्या करना है। यह मॉडल प्रक्रिया और प्रमुख गतिविधियों को इंगित करने का प्रयास करता है। जिसमें सम्पूर्ण शिक्षण, सीखने की प्रक्रिया

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शामिल होती है।

2. संरचना :-
संरचना के गठन में आवश्यक चरणों की संरचना का समावेश होता है। शिक्षण कार्य को सफल बनाने के लिए शिक्षक की अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का निर्धारण करके विद्यार्थियों के प्रारंभिक व्यवहार के बारे में जाना जा सकता है।

3. प्रक्रिया के सिद्धांत -:
इसमें विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं के प्रति अध्यापक की प्रतिक्रिया के साथ संबंधित है,

i) अन्योन्याश्रित का सिद्धांत :-
विद्यार्थी की प्रतिक्रियाओं को बातचीत और अन्योन्याश्रित प्रक्रिया के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

ii) सक्रिय भागीदारी -:
शिक्षक की ओर से बहुत सारी गति विधियों की आवश्यकता होती है, उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक के प्रत्येक स्तर पर छात्रों की क्षमता और कमियों को समझना आवश्यक है।

iii) अनुभूति का सिद्धांत -:
शिक्षण के बाद मूल्यांकन किया जाता है। यदि परिणाम निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार नहीं हैं तो शिक्षक द्वारा कमियों का पता लगाया जाता है। फिर वह सुधारात्मक उपाय करके सुधारने की कोशिश करता है।

4) सहायक प्रणाली -:

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सहायक प्रणाली का संबंध उन सुविधाओं से है। जिनके द्वारा शिक्षक और विद्यार्थी दोनों शिक्षण नीति को सफल बनाने की भूमिका अदा कर सकें। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य अंतः क्रिया होती है,

i) उचित वातावरण
ii) उचित उपकरण
iii) शिक्षक का वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

5. सामाजिक प्रणाली :-

इस मॉडल की आवश्यकता/सफलता विभिन्न मैशलों की अवधि में शिक्षक की योग्यता और क्षमता पर निर्भर करती है। उद्देश्यों का निर्मा उचित रणनीतियों का example उपयोग, विकास की तकनीक आदि। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करके शिक्षण कार्य का सुचारू रूप से चला सकता है।

6. मूल्यांकन :-

ग्लेजर के इस बुनियादी शिक्षण प्रतिमान में शिक्षक अपने शिक्षण कार्य का मूल्यांकन करता है। इस मूल्यांकन के द्वारा शिक्षण की व्यूह रचनाओं की सफलता को निश्चित करता है। शिक्षक इसी आधार पर feedback प्रदान करता है। प्रतिपुष्टि (feedback) कर लेने के बाद उसमें सुधार करने के लिए परिवर्तन भी किए जाते है।

APCO
Date :
Page :

ग्लेसर के बुनियादी प्रतिमान के गुण :-

A.. प्रभावशाली शिक्षण
1) शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच अंतः क्रिया
2) कठिन विषयों में सहायक
3) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित
4) व्यवसायिक निपुणता (शिक्षक में)
5) समझने पर बल
6) रटने की प्रवृति की अवहेलना
7) व्यवस्थित पाठ्य- सामग्री
8) लचीलापन
9) उपचारात्मक शिक्षण
10) प्रतिपुष्टि
11) रचनात्मक कौशलों का विकास
12) अनुशासित शिक्षक
13) सक्रियता।
14) विद्यार्थियों के स्तर अनुरूप शिक्षा
15)

दोष :-

1) सभी विषयों को पढ़ाने में प्रभावशाली नहीं
2) शिक्षण कार्य में अधिक समय
3) प्रशिक्षण शिक्षकों की कमी
4) शिक्षक पर अधिक भार
5) वैज्ञानिक प्रक्रिया पर आधारित
6) शिक्षक के व्यक्तिगत के व्यक्तित्व पर ध्यान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Inductive & Deductive
Methods of Teaching

Title ____ Date ____ Page No. 1

प्र० आगमन व निगमन शिक्षण विधियां क्या है।

उ० आगमन तथा निगमन शिक्षण की दो अलग - अलग विधी होते हुए भी एक- दूसरे की पूरक है। सामान्यतः शिक्षण मे दोनो विधियो को समन्वित रूप से प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार आगमन खोज करने की विधि है, उसी प्रकार निगमन विधि दूसरो की खोज को उपयोग लाने की विधी है। कोई भी आगमन हमेशा निगमन पर समाप्त होता है। जो शिक्षक दोनो विधियो का उचित मिलान करके अपना शिक्षण कार्य करता है वही एक सफल अध्यापक माना जाता है।

आगमन विधि का अर्थ तथा स्वरूप

आगमन विधि काव्य शिक्षण की महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि मे विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण के दौरान सबसे पहले उदाहरण दिए जाते है तत्पश्चात सामान्य सिद्धान्त का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। आगमन विधी उस विधी को कहते है जिसमे विशेष तथ्यो तथा घटनाओ के निरिक्षण तथा विश्लेषण द्वारा सामान्य नियमो अथवा सिद्धान्तो का निर्माण किया जाता है।

दूसरे शब्दो मे इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक बालको के सामने पहले उन्ही के अनुभव क्षेत्रो से विभिन्न उदाहरणो के संबंध मे निरी क्षण, परिक्षण तथा ध्यान पूर्वक सोच विचार करके सामान्य नियम निकलवाता है। इस विधी द्वारा शिक्षण करते समय शिक्षक के समक्ष कुछ विशेष

आगमन विधि

अरस्तु द्वारा प्रतिपादित

अर्थ -

उदाहरणों के माध्यम से
नियम निर्धारण

जैसे -

राम, तितली, बस, पंखा = संज्ञा

पहले उदाहरण प्रस्तुत
बाद में परिभाषा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

परिस्थितियों और उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन उदाहरणों के द्वारा छात्र तार्किक ढंग से सोचते हुए बुद्ध विशेष सिद्धान्त और निगमन की रचना करते है।

आगमन विधि :→

1. अरस्तू द्वारा प्रतिपादित।
2. उदाहरणों के माध्यम से निगमन निर्धारण।

कार्यविधि :→

1. विशिष्ट से सामान्य की ओर
2. मूर्त से अमूर्त की ओर
3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर
4. ज्ञात से अज्ञात की ओर
5. प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर

दैनिक जीवन में आगमन विधि से ज्ञान

उदाहरण :→

एक बच्चा हरे रंग का सेब खाता है। उसे वह खट्टा लगता है। दूसरे दिन वह फिर हरे रंग का सेब चखता है। यह भी खट्टा लगता है। फिर भी वह हरे रंग का सेब खाता है। इन सभी उदाहरणों से वह इस परिणाम पर पहुंच जाता है कि इस हरे रंग के सेब खट्टे होते है। फिर कभी इन सभी उदाहरणों के आधार पर वह जब हरे रंग का सेब देखता है तो बिना खाये ही वह कहता है कि यह हरे रंग का सेब खट्टा है।

ज्ञान प्राप्त करने की इस रीति को आगमन विधि कहते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आगमन विधि

Inductive Method

Provide specific examples first → Then ask students to infer or deduce the rule.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आगमन विधि के गुण :-

1. मनोवैज्ञानिक विधि
2. स्थायी ज्ञान प्राप्त
3. नवीन ज्ञान खोजने का प्रशिक्षण
4. नए तथ्यों की खोज के लिए प्रेरित
5. सक्रियता
6. ज्ञानार्जन हेतु सुविचार
7. स्वयं खोजा हुआ ज्ञान
8. रचनात्मक चिन्तन
9. आत्मविश्वास में वृद्धि
10. ज्ञान प्रत्यक्ष तथ्यों पर आधारित
11. अभ्यास सिद्धान्त पर आधारित
12. रटने की उपेक्षा
13. स्वयं प्रयास के अवसर
14. आलोचनात्मकता का विकास
15. तर्कशक्ति का विकास
16. छोटी कक्षाओं में उपयोगी
17. निर्णय क्षमता का विकास

आगमन विधि के दोष :-

1. समय व शक्ति की अधिकता
2. गति धीमी
3. उच्च कक्षाओं के लिए अनुपयुक्त
4. केवल प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयुक्त
5. सूझ बूझ की आवश्यकता

DELTA Geometry

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Inductive Method

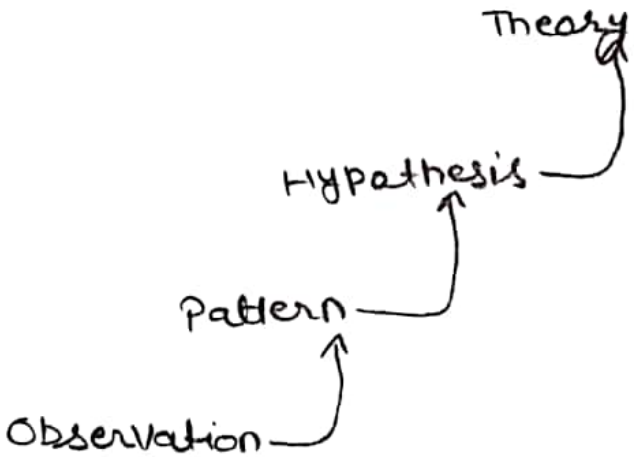

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6. अधिक परिश्रम
7. कुछ विषयों के लिए अयोगी
8. स्वयं में अपूर्ण विधि
9. सभी स्तर के बालकों के लिए अनुपयोगी
10. जटिल व कठिन
11. निष्कर्ष अनिश्चित
12. -- अधिक व्यय

परिभाषाएँ

जे. के मेहता के अनुसार :-

"आगमन विधि तर्क की विधि है जिसमें हम बहुत सी व्यक्तिगत घटनाओं के आधार पर कारणों और परिणामों के सामान्य संबंध स्थापित करते है।"

लैण्डल के अनुसार :-

"जब बालक के समक्ष अनेक तथ्यों उदाहरणों एवं वस्तुओं को प्रस्तुत किया जाता है, तत्पश्चात बालक स्वयं ही निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करते है, तब यह विधि आगमन विधि कहलाती है।

यंग (Young) के अनुसार :-

"इस विधि में बालक विशेष स्थूल तथ्यों (Concrete Facts) के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वयं किसी विशेष सिद्धान्त, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचता है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निगमन विधि

अरस्तु द्वारा प्रतिपादित

अर्थ :-

नियमो के माध्यम से
उदाहरण प्रस्तुत

जैसे :-

संज्ञा → राम, दिल्ली, कलम, पंखा

पहले परिभाषा प्रस्तुत
बाद मे उदाहरण प्रस्तुत

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

यह विधि आगमन विधि के विपरीत तथा पूरक विधि है। इस विधि में छात्रों को पहले ही पूर्व अनुभवों, प्रत्ययों एवं उदाहरणों द्वारा बने हुए नियम तथा सूत्र बता दिये जाते हैं। आगमन विधि की तरह छात्र स्वयं नियमों तथा सूत्रों की खोज नहीं करते। अतः शिक्षण में निगमन विधि का महत्वपूर्ण स्थान है यह विधि विज्ञान व गणित शिक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी है।

कहने का तात्पर्य है कि निगमन विधि में विभिन्न प्रयोगों तथा उदाहरणों के माध्यम से किसी सामान्य नियम को सिद्ध करने के प्रयास किए जाते हैं। निगमन विधि पारम्परिक विधि है और सबसे प्राचीन भी है। इस विधि में सिद्धांत या परिभाषा को पहले बता दिया जाता है, बाद में उस सिद्धांत का प्रयोग बताया जाता है। निगमन विधि का आधार दर्शनशास्त्र है। यह धारणा है कि सत्य शाश्वत व अपरिवर्तनीय होता है। इसी धारणा के अनुसार निगमन विधि भी नियमों की अपरिवर्तनीयता को सिद्ध करने का प्रयास करती है।

निगमन विधि :→

1. अरस्तू द्वारा प्रतिपादित।
2. आगमन विधि के विपरीत।
3. पहले नियम प्रस्तुत।

कार्यविधि :→

1. नियम से उदाहरण की ओर
2. सूक्ष्म से स्थूल की ओर
3. सामान्य से विशेष की ओर
4. अज्ञात से ज्ञात की ओर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निगमन विधि

Deductive Method

overtly explain the rule first → Then provide specific examples to reinforce.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

दैनिक जीवन में निगमन विधि से ज्ञान :-

उदाहरण :-

(1) बच्चे को पहले ही बता दिया जाता है कि हरे रंग के सेब खट्टे होते है। जब वह भ्रम हरे रंग के सेब चखकर देखता है तो उसे स्पष्ट हो जाता है कि यह नियम ठीक है।

(2) बच्चो को पहाड़े याद करा दिए जाते है तथा फिर उनसे उन पहाड़ो की सहायता से प्रश्न हल करने को कहा जाता है। जैसे- उनसे पूछा जाए एक ढेर मे चार गोलियां हो तो 5, 7 तथा 9 ढेरो में कितनी गोलियां होगी? छात्र पहले से याद किए हुए पहाड़ो के द्वारा उत्तर दे सकता है।

निगमन विधि के गुण :-

1. सरलता
2. निश्चितता
3. सर्वव्यापकता
4. मितव्ययी रकम खर्चीली)
5. परम्परागत विधि
6. आगमन विधि की पूरक
7. भविष्यवाणी संभव
8. समयाकाल में उपयोगी
9. पुष्टिकरण मे सहायक
10. कम परिश्रम
11. स्मरण शक्ति विकसित
12. क्रमबद्ध ज्ञान
13. उपार्जन की गति तीव्र

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Deductive Method

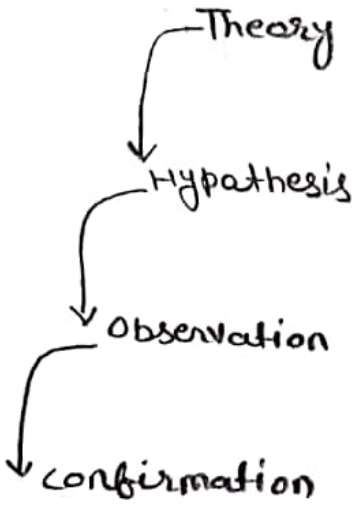

Theory
↓
Hypothesis
↓
Observation
↓
Confirmation

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

14. सत्यता की जांचें आसानी से
15. उच्च कक्षाओ के लिए उपयोगी
16. कम समय मे अधिक ज्ञान
17. संक्षिप्त व उचित विधि

निगमन विधी के दोष :-

1. अस्थाई ज्ञान
2. अमनोवैज्ञानिक विधि
3. खोजे हुए नवीन ज्ञान की उपेक्षा
4. रटने पर बल
5. स्मृति केन्द्रित
6. अध्ययन प्रक्रिया अरुचिकर व नीरस
7. छोटी कक्षाओ के लिए उपयोगी नही
8. नया ज्ञान अर्जित करने के अवसर नही
9. तर्क व निर्णय शक्ति विकासित नही
10. मानसिक शक्ति के विकास मे सहायक नही
11. यन्त्रवत कार्य (छात्र)
12. आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास उत्पन्न नही
13. चिन्तन का अभाव
14. अन्वेषण क्रिया का अभाव
15. नियम अथवा दिया गया ज्ञान हर हालात में स्वीकार
16. मानसिक दासता विकासित
17. व्यक्तिगत ध्यान की उपेक्षा
18. दूसरो पर आश्रित
19. छात्र निष्क्रिय
20. अनुकरण मूलक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Inductive & Deductive Methods

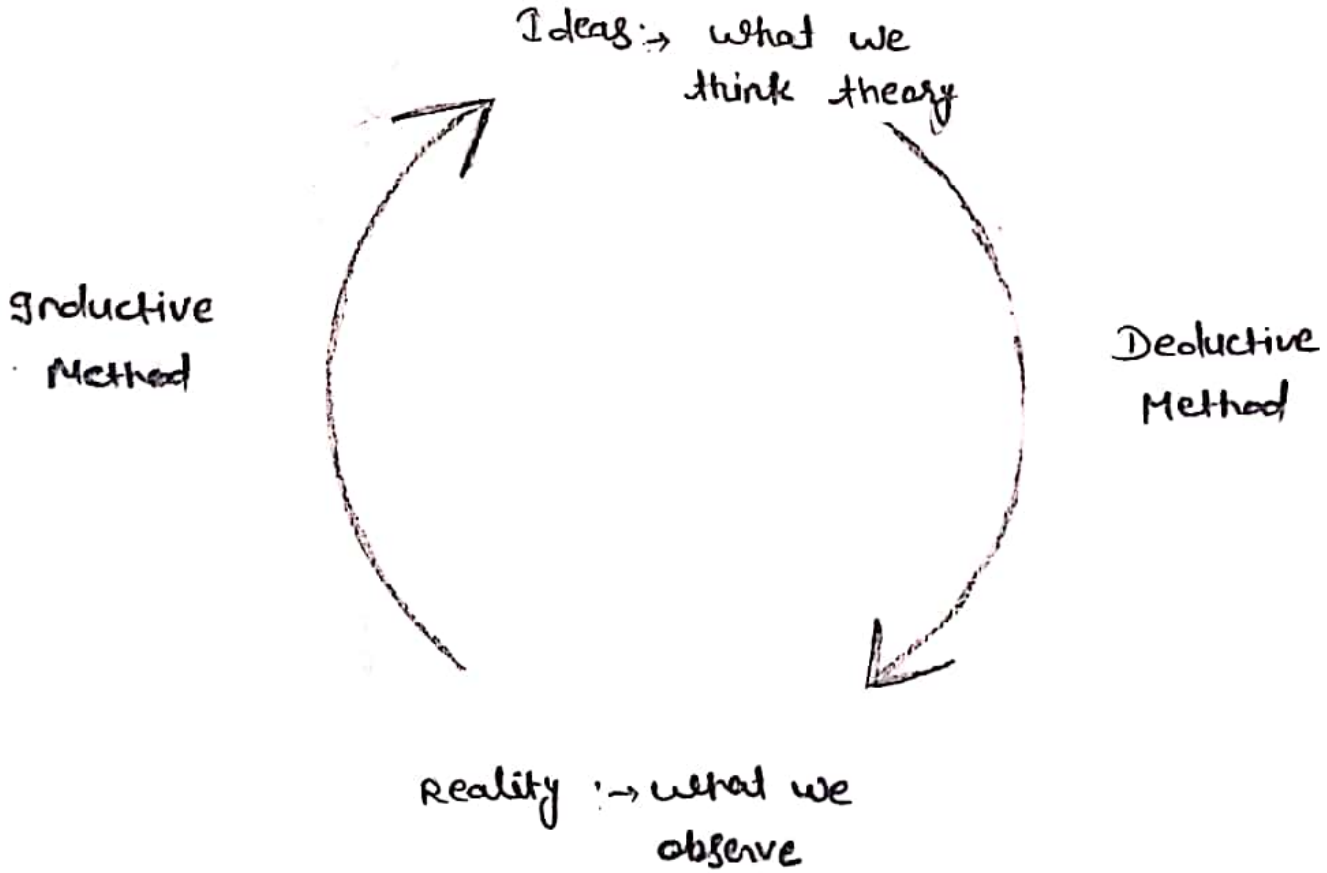

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(1) जीवन्स के अनुसार :-

"ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करना ही निगमन है।"

(2) जे. जे. के मेहता के शब्दों में :-

"निगमन तर्क वह तर्क है जिसमें हम दो तथ्यों के बीच के कारण और परिणाम सम्बन्धी संबंधों की व्याख्या करते हैं और उसकी सहायता से उस कारण का परिणाम जानने का प्रयत्न करते हैं।"

(3) बोल्डिंग के अनुसार :-

"निगमन विधि मानसिक प्रयोग की विधि है।"

निष्कर्ष :-

इन दोनों विधियों की तुलना करने पर हम पाते हैं कि दोनों में ही अपने-अपने गुण तथा दोष हैं। दोनों विधियां एक दूसरे की पूरक हैं। प्रत्येक नवीन ज्ञान आगमन विधि के द्वारा विद्यार्थियों को देना चाहिए तथा उसका अभ्यास निगमन विधि से करवाना चाहिए। शिक्षक के लिए दोनों विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। जो शिक्षक दोनों विधियों का उचित मिलान करके अपना शिक्षण कार्य करता है वही एक सफल अध्यापक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(उद्वेलन)

मस्तिष्क उद्वेलन विधि

मस्तिष्क उद्वेलन विधि चिंतन या सृजनात्मकता को विकसित करने की एक महत्वपूर्ण विधि है। मस्तिष्क उद्वेलन की मुख्य धारणा यह है, कि एक व्यक्ति की तुलना में व्यक्तियों का समूह अधिक विचार प्रस्तुत कर सकता है। यह विधि समस्या केन्द्रित होती है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों के सामने एक जटिल समस्या प्रस्तुत की जाती है। तथा उस समस्या के संबंध में विद्यार्थियों का एक समूह में बैठकर विचार विमर्श करता है, चिंतन करता है। विश्लेषण करता है। और अंत में संश्लेषण के माध्यम से उस समस्या का हल निकालने का प्रयत्न करता है। इसके बाद विद्यार्थी खुद ही अध्यापक के मार्गदर्शन में उसका मूल्यांकन करते है। अतः कहा जा सकता है कि मस्तिष्क उद्वेलन विधि की सहायता से विद्यार्थियों में मुख्य रूप से चिंतन की क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

विशेषताएँ :-

1) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित
2) चिंतन क्षमता का विकास
3) समस्या समाधान में उत्साहित
4) सृजनात्मक क्षमताओं को विकसित
5) ज्ञानात्मक प्रक्रिया
6) विद्यार्थी को सम्पूर्ण स्वतंत्रता
7) भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति
8) सामूहिक चिंतन
9) सामूहिक विचार - विमर्श
10) ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति
11) सामूहिकता की भावना विकसित
12) सहयोग की भावना
13) विश्लेषण विधि का प्रयोग

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page

संज्ञानात्मक विधि का प्रयोग

11) उचित मार्ग निर्देशन
10) मूल्यांकन।
1.) उच्च कक्षा में उपयोगी
11) कुशाग्र बुद्धिशील विद्यार्थी

7. दोष

(1) प्राथमिक कक्षाओं में उपयोगी नहीं
2) योग्य शिक्षकों की कमी
3) मंदबुद्धि, शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी नहीं
4) शर्मीले शिक्षार्थी सक्रिय नहीं
5) पक्षपातपूर्ण प्रोत्साहन
6) शिक्षार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव
7) समय अधिक

8. मस्तिष्क उद्वेलन की विधि के प्रयोग हेतु चरण :-

1) समस्या प्रस्तुत करना।
2) समस्त पक्षों पर विचार
3) योजना निर्माण
4) उपसमस्याएँ चयनित करना
5) साक्ष्यों व आँकड़ो पर चिंतन
6) आँकड़ो को एकत्रित करना
7) परिकल्पना का निर्माण
8) विभिन्न समाधानों को जाँचना
9) व्यवहारिक समाधान का चयन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner